Dr. Madan Paswan
History Department.

Continue

Lecture No. 30
Date: 28.7.2020

हिरण है। चित्रित देवता को पशुपति महादेव के रूप में पहचाना जाता है। लेकिन यह पहचान सन्दिग्ध है, क्योंकि यहाँ बैल को चित्रित नहीं किया गया है और सींग वाले देवता अन्य प्राचीन सभ्यताओं में भी दिखाई पड़ते हैं। हमें पुरुष लिंग की पूजा भी देखने को मिलती है, जो बाद के समय में शिव के साथ जोड़कर देखी जाने लगी। हड़प्पा में पत्थरों से बने पुष्प और स्त्री गुप्तांगों के कई प्रतीक पाए गए हैं। सम्भवतः ये पूजा के लिए थे। ऋग्वेद में आर्येतर लोगों द्वारा पुरुष लिंग की पूजा का उल्लेख है। इस प्रकार हड़प्पा काल में पुरुष लिंग की पूजा शुरू हुई जिसे बाद में हिन्दू समाज में एक सम्मानजनक रूप में देखा गया।

हड़प्पा बर्तन :

हड़प्पा के कुम्हारों को पहिये के उपयोग की विशेषता और विशेषज्ञता हासिल थी। खोजे गए सभी नमूने लाल हैं, इसमें डिश-ऑन-स्टैण्ड (नीचे से आधारयुक्त तस्तरी) भी शामिल हैं। विभिन्न प्रकार के बर्तनों को अलग-अलग डिजाइन से पेंट भी किया गया है। सामान्यतया हड़प्पा के बर्तनों पर पेड़ों और वृत्तों के चित्र होते थे, कुछ बर्तनों पर पुरुषों की छवि भी चित्रित है।

टेराकोटा मूर्तियाँ :

मिट्टी की कई मूर्तियाँ आग में पकाई जाती थीं। जिन्हें आम तौर पर टेराकोटा कहा जाता है। इन्हें खिलौने या पूजा की वस्तुओं के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। वे पक्षियों, कुत्ते, भेड़, मवेशी और बन्दरों के संकेतक हैं। इन टेराकोटा की वस्तुओं में पुरुषों और महिलाओं को भी बहुतायत में देखा जा सकता है जिनमें औरतों की मूर्तियाँ ज्यादा हैं। मुहरों और छवियों का निर्माण बड़े कौशल से किया जाता था, लेकिन टेराकोटा के टुकड़े अनौपचारिक कलात्मकता के प्रतीक हैं। इनके बीच के अन्तर से उन वर्गों के बीच की खाई का पता चलता है जो उनको इस्तेमाल करते थे। पहला ऊपरी वर्ग के सदस्यों द्वारा इस्तेमाल किया जाता होगा और दूसरा आम लोगों द्वारा।

क्या हड़प्पा संस्कृति वैदिक थी?

कभी-कभी हड़प्पा संस्कृति को ऋग्वैदिक कहा जाता है, लेकिन इसकी प्रमुख विशेषताएँ ऋग्वेद में नहीं हैं। निर्योजित कस्बों, शिल्प, वाणिज्य और बड़ी ईंटों के बने बड़े ढाँचे हड़प्पा काल की

Continue.....